International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 2, Issue- 6 | November - December 2025 ISSN: 3048-9490

# विभिन्न संकाय के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन

**डॉ. सहदेव प्रसाद गुप्ता**
प्राध्यापक एवं प्रभारी – शिक्षा संकाय, नवयुग कला, वाणिज्य एवं शिक्षण महाविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

**सारांश**

शिक्षा के आधुनिक मनोविज्ञान में संवेगात्मक बुद्धि का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षण विधि में जो प्रगति वर्तमान में हो रही है उसका कारण सम्भवतः किसी अन्य तथ्य की अपेक्षा यह अधिक है। शायद ही कोई ऐसा अध्यापक होगा जो अपने शिक्षण को प्रभावशाली और आकर्षक बनाना न चाहता होगा। वर्तमान की बदलती अनगिनत परिस्थितियों ने निसन्देह आज शिक्षक के शिक्षण शैली व कार्य–व्यवहार को प्रभावित किया है, जिससे वह अपना कार्य पूर्ण रूप से उस अपेक्षा तक नहीं कर पा रहा है, जो उससे की जाती है। मात्र आदर्शपूर्ण बातों/सिद्धांतों या योजनाओं से अध्यापक की यह स्थिति सुधारी नहीं जा सकती और न ही बालकों का सर्वांगीण विकास कर शिक्षा के लक्ष्य को पाया जा सकता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य विभिन्न संकाय के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इस हेतु उच्च माध्यमिक कक्षा के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के 600 शिक्षकों का चयन किया गया। इन शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि को ज्ञात करने हेतु डॉ. अनमोल हैनडी की संवेगात्मक बुद्धि का परीक्षण का प्रशासन किया तथा इसी प्रकार इन शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को मापने हेतु डॉ. प्रमोद कुमार की शिक्षण प्रभावशीलता मापनी का प्रशासन किया एवं परिणाम स्वरूप पाया कि विभिन्न संकाय के शिक्षकों की उच्च एवं निम्न संवेगात्म्क बुद्धि का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई प्रभावन नहीं पड़ता है।

**कुंजी शब्द–** संवेगात्मक बुद्धि, शिक्षण प्रभावशीलता

आधुनिक शिक्षा–व्यवस्था उन निरंतर परिवर्तित होती परिस्थितियों से गुजर रही है जहाँ शिक्षक की भूमिका केवल विषय–विशेषज्ञ या ज्ञान–संप्रेषक तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह एक मार्गदर्शक, प्रेरक, संवाहक, समन्वयक तथा विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास को दिशा देने वाला संवेदनशील व्यक्तित्व भी बन चुका है। ऐसे संदर्भ में शिक्षक की ''संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence)'' शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम के रूप में उभरकर सामने आई है। संवेगात्मक बुद्धि वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानता है, समझता है, उनका सही प्रकार से प्रबंधन करता है और उन्हें सकारात्मक व्यवहार तथा रचनात्मक निर्णयों में परिवर्तित करता है। शिक्षा संस्थानों में शिक्षक का विद्यार्थियों के साथ सतत् संपर्क, कक्षा का सामाजिक वातावरण, विविध सीखने की गति वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ, अनुशासन–परक परिस्थितियाँ, संस्था का तंत्र तथा अभिभावकों की अपेक्षाएँ –ये सभी ऐसे मनो–सामाजिक कारक हैं जिनका प्रभाव शिक्षक के व्यवहार तथा उसकी शिक्षण–प्रभावशीलता पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। अतः

शिक्षक की संवेगात्मक बुद्धि उसके शिक्षण की गुणवत्ता, कक्षा–नियंत्रण क्षमता, संप्रेषण कौशल, विद्यार्थियों के साथ संबंध, समस्या–समाधान की शैली तथा शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करती है।

आज के प्रतिस्पर्धी और जटिल शिक्षण–परिदृश्य में विभिन्न संकाय–विज्ञान, वाणिज्य और कला–के शिक्षकों की कार्य–स्थितियाँ, विषयगत आवश्यकताएँ तथा विद्यार्थियों के साथ अन्तःक्रिया के स्वरूप में उल्लेखनीय भिन्नताएँ दिखाई देती हैं। विज्ञान संकाय के शिक्षक प्रयोगात्मक और तार्किक स्थितियों में कार्य करते हैं जहाँ व्यवहारिक समस्याओं तथा तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना अधिक होता है। वाणिज्य संकाय के शिक्षक अवधारणाओं की स्पष्टता, व्यावसायिक तर्क और वास्तविक जीवन स्थितियों से जुड़े उदाहरणों के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं। वहीं कला संकाय के शिक्षक विश्लेषण, तर्क–वितर्क, रचनात्मकता और भावनात्मक संवेदनशीलता से युक्त वातावरण में कार्य करते हैं। इन तीनों संकायों की विविध चुनौतियाँ यह संकेत देती हैं कि संवेगात्मक बुद्धि का स्तर सभी शिक्षकों में समान नहीं हो सकता, और इसके आधार पर उनकी शिक्षण–प्रभावशीलता में भी अंतर दिखाई दे सकता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि विभिन्न संकायों के संदर्भ में यह अध्ययन किया जाए कि संवेगात्मक बुद्धि का शिक्षण–प्रभावशीलता पर कितना और किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

इस शोध की आवश्यकता इसलिए भी प्रबल हो जाती है क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य अब केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में जीवन–कौशल, रचनात्मक सोच, सहयोग भावना, मूल्यबोध, आत्म–अनुशासन, आत्म–नियंत्रण और सामाजिक अनुकूलन जैसी क्षमताओं का विकास करना भी है। ये क्षमताएँ तभी विकसित हो सकती हैं जब शिक्षक स्वयं इन गुणों का धारक हो, और यह तभी संभव है जब उसकी संवेगात्मक बुद्धि संतुलित स्तर पर विकसित हो। कई शोध बताते हैं कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक चुनौतियों का सामना धैर्य, सद्भावना और सकारात्मक व्यवहार से करते हैं, विद्यार्थियों की भावनात्मक समस्याओं को समझते हैं, उन्हें प्रेरित कर पाते हैं, कक्षा में समावेशी वातावरण विकसित करते हैं और शैक्षणिक गतिविधियों को प्रभावी तथा अर्थपूर्ण बनाते हैं। दूसरी ओर, निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक तनाव, क्रोध, असंतुलन, गलत संप्रेषण या दुविधा जैसी स्थितियों का सामना करने में कठिनाई महसूस करते हैं, जिससे उनकी शिक्षण–प्रभावशीलता घट जाती है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP–2020) में शिक्षक को एक प्रेरक नेता, सहानुभूतिपूर्ण गाइड और भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यक्तित्व के रूप में विकसित करने पर बल दिया गया है। नीति में शिक्षक–प्रशिक्षण, कौशल–आधारित शिक्षा, सहानुभूति, मानसिक स्वास्थ्य और मूल्य–आधारित शिक्षण को प्रमुखता देने की बात कही गई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक में संवेगात्मक बुद्धि का विकास शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने का एक अनिवार्य तत्व है। किंतु वास्तविकता यह है कि अधिकांश शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विषय–ज्ञान पर तो पर्याप्त बल दिया जाता है, परंतु भावनात्मक कौशलों के विकास–जैसे सहानुभूति, तनाव–नियंत्रण, आत्म–नियमन, संघर्ष–प्रबंधन, सकारात्मक संचार–को अपेक्षित स्थान नहीं दिया जाता। यह शोध इस कमी को दूर करने की दिशा में एक सार्थक कदम सिद्ध हो सकता है।

इस अध्ययन का महत्व शिक्षा संस्थानों और नीति–निर्माताओं दोनों के लिए बहुत व्यापक है। यह शोध न केवल यह बताएगा कि संवेगात्मक बुद्धि शिक्षक की शिक्षण–प्रभावशीलता को कैसे प्रभावित करती है, बल्कि यह भी स्पष्ट करेगा कि कौन–सा संकाय किस प्रकार की भावनात्मक–दक्षताओं की अधिक माँग करता है। उदाहरणतः विज्ञान संकाय में समस्या–समाधान एवं तनाव–प्रबंधन की आवश्यकता अधिक हो सकती है, वाणिज्य संकाय में निर्णय–क्षमता एवं संचार कौशल अधिक प्रभावी साबित हो सकते हैं, जबकि कला संकाय में सहानुभूति और रचनात्मक संवेदनशीलता महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस प्रकार अध्ययन के निष्कर्ष संकाय–विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने में शिक्षा संस्थानों को अत्यंत उपयोगी जानकारी प्रदान करेंगे। साथ ही, यह शोध शिक्षक मूल्यांकन, नियुक्ति, प्रोन्नति और नेतृत्व–विकास कार्यक्रमों के लिए भी व्यवहारिक आधार प्रदान करेगा।

इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों के सीखने के वातावरण पर भी इस शोध के परिणाम सकारात्मक प्रभाव छोड़ सकते हैं। जब शिक्षक भावनात्मक संतुलन, सकारात्मक संबंध, सहयोगपूर्ण दृष्टिकोण और संवेदनशील व्यवहार का पालन करता है, तो विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से प्रेरित, आत्मविश्वासी और सक्रिय बनते हैं। कक्षा का वातावरण स्वस्थ, सुरक्षित और रचनात्मक बनता है। इस प्रकार यह अध्ययन विद्यार्थी–केंद्रित शिक्षण को मजबूत करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में यह शोध नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करेगा और संवेगात्मक बुद्धि तथा शिक्षण प्रभावशीलता के बीच संबंधों का गहन विश्लेषण करते हुए आगामी शोध कार्यों के लिए नए मार्ग प्रशस्त करेगा। इस तरह यह अध्ययन न केवल सिद्धांतात्मक रूप से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि व्यवहारिक, सामाजिक और शैक्षिक स्तर पर भी अत्यंत उपयोगी साबित होगा।

**उद्देश्य –**

1. विभिन्न संवेगात्मक बुद्धि के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में अंतर संबंधी अध्ययन करना।

**परिकल्पना –**

1. उच्च संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न संकाय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

2. निम्न संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न संकाय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

**चरः** प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित चर लिये गये हैं –

**स्वतंत्र चर –** (1) संवेगात्मक बुद्धि

(2) विभिन्न संकाय

**आश्रित चर –** शिक्षण प्रभावशीलता

**न्यादर्श –**

न्यादर्श तालिका

| संकाय | संवेगात्मक बुद्धि | अध्यापक | अध्यापिका | कुल |
|---|---|---|---|---|
| कला संकाय | उच्च | 50 | 50 | 100 |
| | निम्न | 50 | 50 | 100 |
| वाणिज्य संकाय | उच्च | 50 | 50 | 100 |
| | निम्न | 50 | 50 | 100 |
| विज्ञान संकाय | उच्च | 50 | 50 | 100 |
| | निम्न | 50 | 50 | 100 |
| **महायोग** | | 300 | 300 | 600 |

**शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण–**

प्रस्तुत शोधकार्य में आंकड़ों के संग्रह हेतु निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया हैं –

1. संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण – डॉ. अनमोल हैन्डी
2. शिक्षण प्रभावशीलता परीक्षण – डॉ. प्रमोद कुमार

**सांख्यिकी विधि** – प्रस्तुत शोध में परिणामों के विश्लेषण हेतु प्रसरण विश्लेषण (एनोवा) सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

**परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या**

**परिकल्पना–01**

1. उच्च संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न संकाय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं होता है।

**तालिका क्रमांक 01**

**उच्च संवेगात्मक बुद्धि के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अंतर संबंधी तुलनात्मक परिणाम**

| संकाय | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन |
|---|---|---|---|
| कला | 100 | 307.75 | 27.96 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| वाणिज्य | 100 | 314.29 | 19.47 |
| विज्ञान | 100 | 313.32 | 26.58 |

**प्रसरण विश्लेषण की सारांश सारणी**

| विचरण के स्त्रोत | स्वतंत्रता के अंश | वर्गों का योग | मध्यमान वर्ग | 'एफ' अनुपात | 'पी' मान |
|---|---|---|---|---|---|
| समूहों के बीच | 2 | 2491.25 | 1245.62 | 2.00 | > 0.05 |
| समूहों के मध्य | 297 | 184863.10 | 622.43 | | |

स्वतंत्रता के अंश – 2,297 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.04

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 4.71

उपरोक्त तालिका में उच्च संवेगात्मक बुद्धि के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में अंतर संबंधी परिणाम प्रदर्शित किये गये हैं। परिणामों से स्पष्ट है कि विभिन्न संकाय के उच्च संवेगात्मक बुद्धि के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के शिक्षण प्रभावशीलता में सांख्यिकीय गणनानुसार प्राप्त मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है, क्योंकि प्राप्त 'एफ' अनुपात का मान 2.00 है जो 0.05 स्तर पर निर्धारित न्यूनतम मान 3.04 से कम पाया गया।

अतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पड़ता है।

**परिकल्पना–02**

निम्न संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न संकाय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं होता है।

**तालिका क्रमांक 02**

**निम्न संवेगात्मक बुद्धि के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में अंतर संबंधी तुलनात्मक परिणाम**

| संकाय | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन |
|---|---|---|---|
| कला | 100 | 295.45 | 30.74 |
| वाणिज्य | 100 | 298.27 | 27.34 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| विज्ञान | 100 | 294.93 | 28.40 |

**प्रसरण विश्लेषण की सारांश सारणी**

| विचरण के स्त्रोत | स्वतंत्रता के अंश | वर्गों का योग | मध्यमान वर्ग | 'एफ' अनुपात | 'पी' मान |
|---|---|---|---|---|---|
| समूहों के बीच | 2 | 645.95 | 322.97 | 0.39 | > 0.05 |
| समूहों के मध्य | 297 | 247414.97 | 833.05 | | |

स्वतंत्रता के अंश – 2,297 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.04

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 4.71

उपरोक्त तालिका में निम्न संवेगात्मक बुद्धि के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में अंतर संबंधी परिणाम प्रदर्शित किये गये हैं। परिणामों से स्पष्ट है कि निम्न संवेगात्मक बुद्धि के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया क्योंकि, प्राप्त 'एफ' अनुपात का मान 0.39 है जो 0.05 विश्वास स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान 3.04 से कम है।

अतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि निम्न संवेगात्मक बुद्धि के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अंतर नहीं होता है।

**परिणामों की व्याख्या**

तालिका क्रमांक 01 एवं 02 से विदित है कि विभिन्न संकाय के शिक्षकों की उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि की शिक्षण प्रभाव शीलता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं प्राप्त हुआ है जो इस बात का संकेत है कि प्रभावी शिक्षण केवल संवेगात्मक बुद्धि पर निर्भर नहीं करता, बल्कि अनेक अन्य कारकों के संयुक्त प्रभाव से निर्मित होता है। विद्यालयों में शिक्षकों के लिए निर्धारित पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम, निरीक्षण–व्यवस्था तथा प्रशासनिक अपेक्षाएँ अक्सर समान होती हैं, जिससे सभी शिक्षक एक निश्चित मानक के अनुरूप कार्य करने के लिए बाध्य होते हैं। इसके अतिरिक्त, अनुभव, विषय–ज्ञान, कक्षा–प्रबंधन तकनीकें, विद्यार्थियों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना और नियमित व्यावसायिक विकास भी शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं। कई बार शिक्षक अपनी भावनाओं को कार्यस्थल पर नियंत्रित रखते हुए, नियमों और प्रक्रियाओं के अनुसार शिक्षण करते हैं, जिससे संवेगात्मक बुद्धि का अंतर व्यावहारिक रूप से कम उभरकर आता है। साथ ही, शिक्षण प्रभावशीलता के मापन उपकरण भी प्रायः सीमित या मानकीकृत होते हैं, जिनमें भावनात्मक दक्षताओं का सूक्ष्म अंतर परिलक्षित

नहीं हो पाता। इन सभी कारणों से उच्च और निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अपेक्षित अंतर स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं हो पाता।

## निष्कर्ष

- उच्च संवेगात्मक बुद्धि के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अंतर नहीं प्राप्त हुआ है।
- निम्न संवेगात्मक बुद्धि के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अंतर नहीं प्राप्त हुआ है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अस्थाना, विपिन एवं विजया तथा निधि (2013) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन 28/115 ज्योति ब्लाक, संजय पैलेस, आगरा–2,
2. कुदेशिया, उमेशचन्द्र (2012) शिक्षा प्रशासन, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, डॉ. रागेय राघव मार्ग, आगरा–2,
3. राय. बी.के. (2008), शिक्षा में मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकीय, नई दिल्ली, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
4. शर्मा, डॉ. राकेश कुमार एवं जोशी डॉ. मनीष (2009), अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आगरा–2, अग्रवाल पब्लिकेशन।
5. सिंह एवं सिंह (1998), भारतीय शिक्षक समस्याएं एवं समाधान, नई दिल्ली, यूनिवर्सिटी, पब्लिकेशन।
6. सिंह, राजेन्द्रपाल (1980) शिक्षा और अनुसंधान, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, पराग प्रिटर्स, दिल्ली.
7. सिंह, वाई. के. (2007), शैक्षिक तकनीक, नई दिल्ली, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
8. सिंह, अरूण कुमार (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, भारतीय भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्री पब्लिशर्स।
9. श्रीवास्तव, एम.एम. (2007), शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली, यूनिवर्सिटी, पब्लिकेशन।
10. तिवारी, एस.के. (2010), संगठनात्मक व्यवहार, नई दिल्ली, अग्रवाल पब्लिकेशन।
11. वर्मा, डॉ. प्रीति, श्रीवास्तव, डॉ. डी. एन, मनोवैज्ञानिक और शिक्षा में सांख्यिकीय, नवीन संस्करण, आगरा–2, विनोद पुस्तक मंदिर।